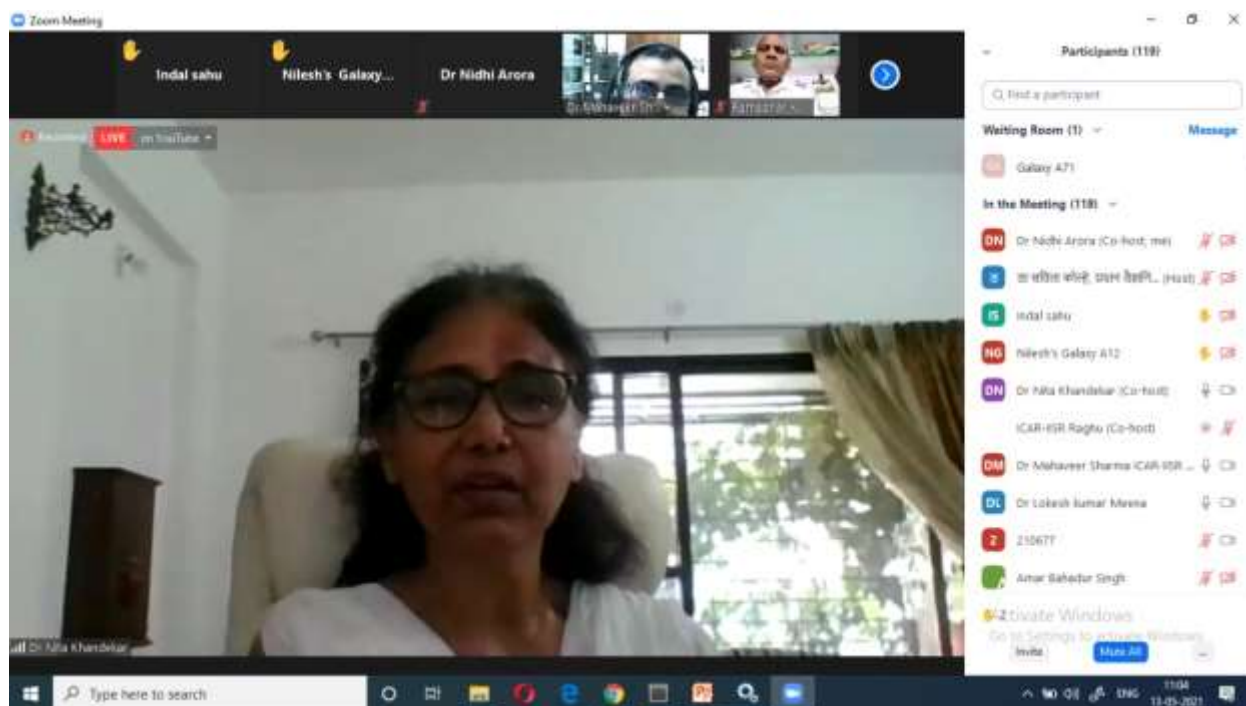


वेबिनार जैविक खेती 13/05/2021

जैविक खेती, खेती की कोई नई पद्धति नहीं है। वास्तव में, यह खेती की प्राचीन पद्धति में से एक है जिसका उद्देश्य जैविक कचरे, अपशिष्ट फसलों, जानवरों और खेत अपशिष्ट, जलीय अपशिष्ट और अन्य कार्बनिक पदार्थों का उपयोग करके मिट्टी को जीवित रखने के लिए फसलों को उगने की तकनीकी हैं। उक्त विचार इंदौर स्थित आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोयाबीन रिसर्च द्वारा आयोजित एक ऑनलाइन वेबिनार के माध्यम से ऑर्गेनिक फार्मिंग के प्रख्यात विशेषज्ञों द्वारा व्यक्त किये गए।

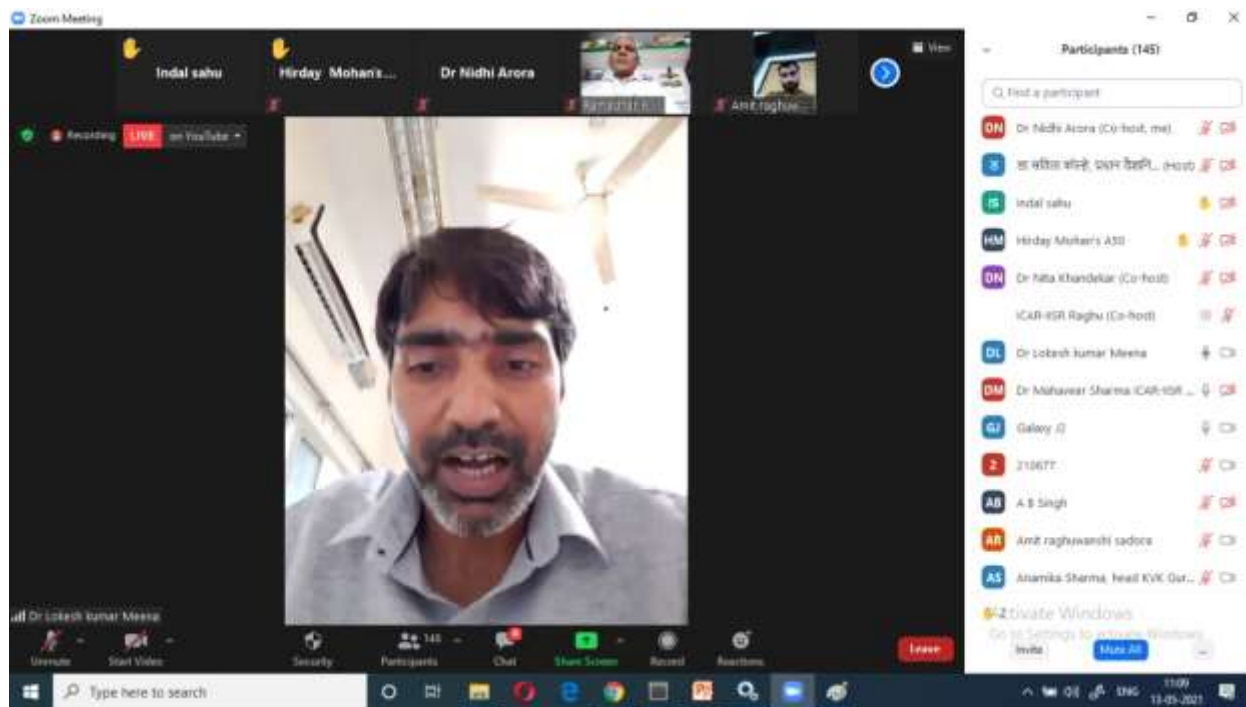
भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा खरीफ का मौसम शुरू होने से पूर्व किसानों को आवश्यक जानकारी देने के लिए आयोजित वेबिनारों की श्रृंखला में आज मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के लगभग **205** प्रतिभागियों के साथ ऑर्गेनिक फार्मिंग पर एक वेबिनार आयोजित किया गया। इसमें कृषकों के साथ साथ तकनीकी के प्रचार प्रसार में शामिल विस्तार कार्यकर्ता, अटारी, कृषि विज्ञान केंद्रों और गैर सरकारी संगठनों से संबंधित विस्तार कर्मियों ने भाग लिया। इस वेबिनार में देश के शीर्षस्थ अनुसन्धान संस्थानों भारतीय कृषि विज्ञान संस्थान, भोपाल के मृदा विज्ञान संस्थान और आईसीएआर-नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, करनाल के प्रख्यात वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिए गए।



कार्यक्रम के प्रारंभ में, अपने स्वागत भाषण में, संस्थान निदेशक डॉ। नीता खांडेकर ने जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डाला और किसान समुदाय को विभिन्न कृषि मुद्दों पर आवश्यकता आधारित जानकारी को बढ़ावा देने के लिए संस्थान द्वारा चल रहे प्रयासों के बारे में भी बताया। उन्होंने सदन को यह भी बताया कि संस्थान जल्द ही एक आईसीएआर-मध्य भारत समचार कार्यक्रम नाम का एक समाचार कार्यक्रम शुरू कर रहा है जो की संस्थान के यूट्यूब चैनल पर नियमित प्रसारित किया जायेगा शुरू कर रहा है, जिसमे मध्य

भारत के आईसीएआर संस्थानों के वैज्ञानिकों द्वारा उत्पन्न उपलब्धियों, प्रौद्योगिकियों और वैज्ञानिक जानकारी से संबंधित कृषि समाचार को कवर करता है।

इस वेबिनार का उद्देश्य किसानों को पौष्टिक एवं स्वस्थ वर्धक भोजन के उपयोगी खाद्योत्पादों के लिए जैविक खेती प्रोत्साहित करना है। आज लगभग सभी खाद्य पदार्थ एवं उत्पाद कुछ न कुछ रसायनों द्वारा दूषित हैं। इसलिए जैविक खेती ही इन खतरनाक रसायनों से खुद को और प्रकृति को बचाने का एकमात्र तरीका है। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. एम. पी. शर्मा के प्रारंभिक उद्बोधन से हुई। उसके बाद डॉ. लोकेश कुमार मीणा ने वक्ताओं और उनकी उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण दिया।



वेबिनार के दौरान अपनी प्रस्तुति में, डॉ। ए.बी. सिंह, प्रमुख वैज्ञानिक और मृदा जीवविज्ञान विभाग के प्रमुख, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान ने जैविक खेती के फायदे और सिद्धांतों को रेखांकित किया। उनके अनुसार, संगठित रूप से उत्पादित कृषि उत्पाद और खाद्य पदार्थ न केवल मानव उपभोग के लिए सुरक्षित, स्वस्थ हैं, बल्कि पर्यावरण वनस्पतियों और जीवों के अनुरूप भी हैं। उन्होंने जैविक खेती के कारण भारत सरकार द्वारा एक टास्क फोर्स के गठन के फलस्वरूप जैविक खेती के तरीकों को बढ़ावा देने से संबंधित बिन्दुओं की जानकारी दी। उनके अनुसार इसके बाद ही में जैविक उत्पादों के प्रचार और विपणन के लिए एक संगठन **APEADA** का गठन किया। डॉ ए.बी. सिंह ने जैविक खेती के कुछ प्रमुख सिद्धांत भी दिए। उनके अनुसार, हमें कीटों और कीटों के प्रबंधन के लिए केवल जैविक कीटनाशकों का उपयोग करना होगा। इसके अलावा, हमें केवल नाइट्रोजन आधारित पोषक तत्वों की पूर्ति करनी चाहिए जिसको जैविक खादों जैसे एफवाईएम, कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, बायोफर्टिलाइजर आदि से की जा सकती हैं। क्योंकि हमारी मिट्टी में अन्य पोषक तत्वों की मात्रा उपलब्ध है। नए किसानों के लिए जो जैविक खेती शुरू करना चाहते हैं, उन्होंने दलहनी फसलों के साथ शुरुआत

करने और शुरुआती 3 वर्षों के लिए कम उपज के तौर पर समाधान मान लेना चाहिए, क्योंकि, चौथे वर्ष से उपज का स्तर बढ़कर छठवे वर्ष में स्थिर होने लगता है।

बाद में, डॉ। आरके वर्मा ने पारंपरिक खेती की तुलना में जैविक खेती, इसकी जरूरतों, सिद्धांतों, घटकों और लाभों और जैविक खेती के नुकसान के बारे में बताया। उन्होंने जैव उर्वरक, इसके अनुप्रयोगों और उनकी उपलब्धता, वर्मीकम्पोस्टिंग, खाद और खेत याई खाद के बारे में भी बताया। उन्होंने फसल के कचरे को जलाने और इसके परिणामों पर ध्यान आकर्षित किया। अपने व्याख्यान में उन्होंने जैविक खेती करने की प्रक्रिया के बारे में बताया, फसल में जैविक खेती और पोषक तत्व प्रबंधन शामिल हैं। इस अवसर पर प्रश्न-उत्तर सत्र से संबंधित एक वैज्ञानिक बातचीत भी की गई। आयोजन के सचिव डॉ। लोकेश कुमार मीणा द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ वेबिनार का समापन हुआ।

